WWJMRD 2018; 4(2): 96-97
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGC Approved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

विजय कुमारी
हिन्दी, यूजीसी नैट
कुंगड़ भिवानीए भारत

Correspondence:
विजय कुमारी
हिन्दी, यूजीसी नैट
कुंगड़ भिवानी भारत

प्रेमचंद के साहित्य में नारी चेतना

विजय कुमारी

Abstract
समाज सामाजिक सम्बन्धों का जटिल जाल होता है और इन सब के केद्र में स्वयं मनुष्य है । यह मनुष्य ही जो समाज में संगठन एवं व्य स्थापित करने में सदा से प्रयत्नशील है। और उसे प्रगति एवं गतिशीलता की दिशा में ले जाने प्रयासों में लगा हुआ है । साधारणत इस व्यवस्था का कर्ता जब पुरुष हो गया तो वह स्वःभावता अहंकारी भी हो गया और वह अपनी स्थिति को सामाजिक परिवेश में सर्वाच्च स्तर में कामयाब भी हुआ । यही मनोभाव पुरुष को वर्चस्ववाद की ओर ले गया। उसने यदि स्त्री को अधिक पढ़ी लिखी जागरूक, तर्कशील, बुद्धिमान पाया अपने को अन्दर ही अन्दर खघ्तरा महसूस करने लगा । पुरुष सदियों से स्त्री को निम्न स्थान देने लगा। समाज, धर्म और लगभग जीवन के सभी क्षेत्रों में स्त्री दास शुद्रादी के रूप में जीवन जीने के लिए अभिक्षप्त थी।

Keywords: समाज, संगठन व्यवस्था, वर्चस्वाद

Introduction
वैश्विक स्तर पर लगभग स्त्री, स्त्री और मनुष्यवैश्विक स्तर पर लगभग स्त्री इसी चक्र में फँसी हुई थी। परंतु राजा राम मोहन राय के निरंतर प्रयासों से अंग्रेजी शासन ने 1829 में सतीप्रथा को बंद कर दिया । आगे महात्मा फुले और सावित्रीमाई फुले ने स्त्री शिक्षा की नींव डाल कर स्त्री उध्दार का सफल प्रयास किया । 1856 में लडकी के विवाह की न्युनतम आयु 18 वर्ष करने वाला शारदा ऐक्ट लागू हो गया । साथ हि वैश्विक स्तर की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रभाव भी भारतीय परिवेश पर दिखाई देता है। जैसे की स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व का पुरस्कार करने वाली 1789 की फ्रांस की क्रांती, सन 1867 में ब्रिटन में स्त्रियों को मताधिकार का मिल गया।1 इन सभी घटनाओं का भारतीय साहित्य पर प्रभाव होता रहा। भारतीय साहित्य के प्रमुखतम साहित्यकारों में प्रेमचंद ऐसे साहित्यकार है जिनकी कहानियों और उपन्यासों में नारी की समस्याओं का चिंतन हुआ है। वास्तविक रूप से नारी विमर्श की चर्चा प्रेमचंदोत्तर काल में हुई है, परंतु भारतीय परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श का आगाज तो प्रेमचंद के साहित्य में हो चुका था, इसे नकारा नही जा सकता । इसी दृष्टी से प्रेमचंद के साहित्य में नारी चिंतन इस विषय पर यह शोधपत्र प्रस्तुत है।
आधुनिक हिन्दी साहित्य आरम्भिक काल स्त्री–चेतना से ही हुआ है। स्त्री चेतना की सर्वप्रथम प्राथमिकता में स्त्री शिक्षा निहित है। 'भाग्यवती' परीक्षागुरू आदि उपन्यासों में स्त्री चेतना ही मूलाधार है ।2 इसी के प्रभाव के चलते आधुनिक काल में प्रेमचंद ने निर्मला के जरिये औसत भारतीय स्त्री की वेदना से युक्त सामाजिक यथार्थ की तस्वीर गढ़ने की कोशिश की है । निर्मला की पीड़ा और दीनता को प्रेमचंद ने तत्कालिन सामाजिक स्थितियों में नारी की अवस्था के रूप में दिखाया है । इस संदर्भ में प्रेमचंद ने कहते ह कि– "नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नहीं है ,उसे समाज में पूरा आदर दिया जाना चाहिए, तभी समाज उन्नति करेगा।" प्रेमचंद के साहित्य में नारी–भावना का एक युगांतर प्रस्तुत हुआ है । प्रेमचंद अतीत की ओर दृष्टिपात करते हुए सोचते हैं कि "जब तक साहित्य का काम केवल मन बहलाव का सामान जुटाना, लोरियाँ गा–गा कर सुनना, आंसू बहा कर जी हल्का करना था, तब तक उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी । हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा है, जिसमें उच्च चिंतन हो, जो हममें गति और बैचौनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि सोना मृत्यु का लक्षण है ।"3
प्रेमचंद ने अपने साहित्य में नारी वर्ग की जिन जिन समस्याओं पर प्रकाश डाला है । वे अधिकांशतः मध्य एवं निम्न वर्ग की नारियों की अपनी ही समस्याएं हैं । प्रेमचंद ने सेवासदन, निर्मला,गोदान आदि उपन्यासों के माध्यम से मध्यम वर्ग की दुविधा–भरी परिस्थिति का चित्रण किया है । साथ ही उनकी कहानियों में भी नारी विषयक चिंतन उसी रूप में व्यक्त हुआ है, जो जैसा है । मध्यम वर्ग की त्रासदि यह है कि वह भले हि बौद्धिक स्तर पर विकासित होता है परंतु आर्थिक अभाव के कारण उसके जीवन अधिक नहीं हो पप्ता। परिणामतः उसकी स्थिति घुटन भरी हो जाती है । आर्थिक अभावो की त्रासदी औ र सामाजिक मर्यादा–पालन के कारण यह वर्ग अनेक प्रकार की कुरीतियों से लिप्त हो जाता है । इसी कारण यह वर्ग निम्न वर्ग से कही अधिक संतप्त होता है, उसका वर्णन प्रेमचंद के अधिकांश साहित्य में दिखाई देता है । मध्यवर्गीय स्त्रियों और निम्नवर्गीय स्त्रियों की समस्याओं का सही आकलन प्रेमचंद करने में सफल है । निम्नवर्गीय स्त्री और दलितों के प्रति व्यापक आदर्शवादी दृष्टिकोन को प्रेमचंद ने अपनाया है । इस संदर्भ में डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत का कथन है कि, "प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में दलित मानवता तथा स्त्रियों के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित किया है, इनका आदर्शवाद इनकी ऐसी सहानुभूति का परिणाम है।"4प्रेमचंद ने नारी को प्रेम शक्ति का विकास माना है। प्रेमचंद नारी के विकास में विवाह को बंधन मानते है। वे कहतें है– नारी का जीवन विवाह के बादं बदल जाता है। वैवाहिक असंगतियाँ समाज में अनेक विकृतियों को पनपने का अवसर देती हैं । प्रेमचंद ने अनुभव किया है कि नारी धन की नहीं बल्कि प्रेम की भूखी है, इसलिए वे प्रेम के अभाव में आजन्म कुवांरी रहने की कल्पना भी कर लेती है। प्रेमचंद के साहित्य देखी गई है। यही कारण है कि धनाभाव में 'ठाकुर कुआ' की गंगा, 'पूस की रात' की मुन्नी, 'सुगामी' की लक्ष्मी, 'अनुभव' की ज्ञानबाबू की पत्नी, 'पासवाली' की गुलिया, 'चमत्कार' की चम्पा, 'बालक' की गोमती, 'गोदान' की धनिया आदि

कहानियों की पत्नियां अपने पति से केवल प्रेम का वरदान प्राप्त कर सुखी जीवन व्यतीत करने में समर्थ होती है। इसके विपरीतं'शिकार' उपन्यास की वसुधा, 'वैश्य' की लीला, निर्मला' की निर्मला, 'सेवासदन' की सुमन, 'कायाकल्प'की मनोरमा, 'कर्मभूमि' की सुखदा, 'नैना' तथा 'गोदान'की गोविंदी, आदि नारी पात्र प्रभूत रत्न राशि होते हुए भी पति के स्नेह के बिना निराशापूर्ण दुर्भाग्य का जीवन जीती हैं –प्रेमचंद की दृष्टि में पुरुष यद्यपि शक्तिमान है, फिर भी नारी के आगे वह दया का पात्र है और वह नारियों को आदेश देता है, "तुम लोग उन पर क्रोध मत करो, जिसे तुमने पैदा किया वह तुम्हारे हाथ से कैसे खराब हो सकते है?"5 प्रेमचन्द कें कथा–साहित्य में तो नारी के विविध रूपों एवं स्थितियों के अनेक पहलू उजागर हुए है। वास्तविक सेवा–सदनों तथा विधवा– आश्रमों की स्थापना भी हो चुकी थी उसके बाद लिखा भारतीय साहित्य कहीं न कहीं उन बातों को अपने साहित्य में स्थान देता रहा था । प्रेमचन्द का प्रयास भी उसी परंपरा की कड़ी के रू‍प में देखा जा सकता है। अपने संपादकीयों में प्रेमचन्द उन स्त्रियों के पक्ष में खड़े दिखते हैं जो वास्तविक रू‍प में अभावग्रस्त या शोषित है। जो अनपढ़, शोषित आदि है, उनकी बेहतर स्थिति के लिए वे प्रयत्नशील दिखते है। "पश्चिम के नारीदृआंदोलन संबधी दृष्टिकोणं के प्रति प्रेमचन्द बहुत सहमत न भी हो, परन्तु भारतीयं परिप्रेक्ष्य में स्त्रियों के अधिकारों के लिए उन्होने बहुतं लिखा इसमें दो–राय नहीं हो सकती । जहाँ तक केवल विचार प्रकट करने हो, कड़े से कड़ा और कठोरं से कठोर विचार प्रेमचन्द ने बेलौस एवं निर्भीकता से कट किया है किन्तु जहाँ वह विचार उनसे सीधे टकराता दिखता है।"6

हंस जनवरी 1931 के संपादकीय हरि विलास शारदा का नया कानून शीर्षक से वे लिखते हैं कि विधवा को पति की जायदाद पर अधिकार हो। यह बिल 1933 में असेबली में पेश किया गया। तबं जागरण के संपादकीय में प्रेमचन्द ने लिखा है श्री हरि विलास शारदा ने अपनी सामाजिक सेवा से भारत के इतिहास में अमर पद प्राप्त कर लिया है। उन्हें कट्टर संप्रदाय के महानुभावों के प्रति संदह था कि शायद वे इसका विरोध करें । प्रेमचन्द का मानना था कि पुरुष अगर संपत्ति का मनमाना उपयोग कर सकते हैं तो स्त्रियां क्यों नहीं। वे लिखते हैं "इस समय हमारा सामाजिक धर्म यह है कि शास्त्रों और स्मृतियों की शरण लेकर इस बिल को रद्द करने की चेष्टा न करें। विधवाओं के साथ समाज ने बहुत अन्याय किया है और अन्याय को पाल कर कोई समाज सरसब्ज नहीं हो सकता ।"7 प्रेमचंद ने स्त्री और पुरुष दोनों को एक दूसरे के पूरक कहा है, एक के अभाव में स्त्री औरं पुरुष दोनों की दुर्गा‍ति मानते है। "'गोदान' में भोलां पत्नी के अभावजन्य कष्टों के अनुभव के बाद ही होरी से कहता है – "मेरा तो घर उजड़ गया, यहां तो एक लोटा पानी देने वाला भी नहीं है ।"8 स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता संबधी प्रेमचन्द का विचार भारतीयं था– कहने का मतलब यह है कि वे स्त्रियों के आर्थिक स्वातंर्त्य के पक्षधर तो थे पर उनके नौकरी करने के पक्ष में नहीं थे। यह विरोधाभासी लग सकता है। पर शिवरानी देवी के साथ की उनकी बातचीत के हवाले से ऐसा कहा सकता है। शिवरानी देवी जब स्त्रियों की नौकरी की बात उठाती है, तो प्रेमचन्द कां कहना था –"स्त्रियां नौकरियां करने लगी है, मगर वहं अच्छा नहीं है, मैं इसको अच्छा नहीं समझता। अब इसका नतीजा क्या हो रहा है अब पुरुष और स्त्री दोनों नौकरियां करने लगे हैं , तब इसके मानी क्या है. रुपये ज़्यादा आ जाएँग। उसी का तो यह फल है कि पुरुषों की बेकारी बढ़ रही है ।" विधवा और तलाक, आर्थिक स्वतंत्रता के साथ ही प्रेमचन्द ने बालिकाओं के शिक्षित होने में विशेष रुचि दिखाई। वे मानते थे कि सामाजिक कुरीतियों पर सीधे सीधे प्रहार करते हुए प्रेमचंद ने लिखा है हि क्या समाज की दोगली नीति है, एक आदमी के छू जाने से दूसरे आदमी की जात चली जाती है और कहने को तो कह दियाकृजहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता वास करते हैं । लेकिन कोई पूछे कि आपने किसी तरह का कोई अधिकार नारियों को दिया है। .....वह एक खेत है जिससे सन्तान की, पुरुष के संपत्ति के उत्तराधिकारी की प्राप्ति होती है। इसीलिए तो कन्या और गौ का स्थान एक है दृचाहे जिसके साथ बाँध दो। पाँच साल की लड़की का ब्याह पचास साल के बुड्ढे के साथ हो सकता है।" 10 इसके साथ ही प्रेमचंद अपनी एक कहानी नरक का मार्ग में कहते हैं, कि 'स्त्री सब कुछ सह सकती है, दारुण से दारुण दुख बड़े से बड़ा संकट, अगर नहीं सह सकती है तो अपने यौवन काल की उमँगों का कुचला जाना। इ कहानी में स्थिति थोडी–सी अलग है। यहां लड़की के माता पिता धन के लोभ में लड़की का बेमल विवाहे कर देते है। बूढे. पति को पाकर भी लड़की सोचती हैं कि वह पति की सेवा करेगी क्यो‍कि यह उसका धर्म है। ससुराल में एकदम उलटा माहौल पाकर स्त्री बौखला जाती है। पति उसके स्वाभाविक बनाव शृगारं पर सशंकित और ईर्षया दग्ध रहता है। स्त्री जल्दी ही अपनी स्थिति समझ जाती है और कहती है कि श्इन्हें स्त्री के बिना घर सूना लगता होगा, उसी तरह जैसे पिंजरे में चिड़िया को न देख कर पिंजरा सूना लगता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रेमचन्द की स्त्रियों अपनी स्थिति का विश्लेषण बखूबी करती है। गुलाम जिसं दिन गुलामी का एहसास कर ले, उसकी लड़ाई उसी दिन शुरू हो जाती है। श्नरक का मार्गृ कहानी में प्रेमचन्द् की स्त्री दो हाथ आगे निकल कर कहती है "मैं इसे विवाह का पवित्र नाम नहीं देना चाहती... यह कारावास ही है। श्मैं इतनी उदार नहीं हूं कि जिसने मुझे कैद में डाल रखा हो उसकी पूजा करुँ, जो मुझे लात मारे उसके पैरों को चूमूं ।... स्त्री किसी के गले बांध दिये जाने से ही उसकी विवाहिता नहीं हो जाती । विवाह का पद वह पा सकता है जिसमें कम से कम एक बार तो हृदय प्रेम से पुलकित हो जाये। प्रेमचन्द यहां उस विवाह की बात कर रहे हैं जहां दो लोगों के मन पहले मिलते है।"11 प्रेमचंद अपने साहित्यं के माध्यम से मात्र स्त्री उत्थान का हि चित्रित कर रहे थे, ऐसा कतई नही है । वे मानते थे कि स्त्रियों ने अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए क्यो‍कि कानूनी अधिकारों के बिना पुरुष समाज उसे ठगता जाएगा । यहि कारण है कि उस समय में नारी के उत्थान के लिये कार्य करने वाले आर्य समाजियों के प्रति प्रेमचंद सहृदयता से कहते हैं कि – "मैं तो धन्यवाद देता हूँ दयानंद को, इन्होने आर्य–समाज का प्रचार करकें स्त्रियों और समाज का बड़ा उद्धार किया है"12 साहित्य के सम्राट कहे जाने वाला यह साहित्यकार नवयुग निर्माताओं में से एक कहा जा सकता है । उन्होन अपने साहित्य में समाज जीवन कें विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है । साथ हि नारी जीवन की विभिन्न स्थितियाँ एवं गतियों को भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट रूप में दिखाया है । प्रेमचंद की कहानियों या उपन्यासों के वे सभी पात्र जो आधुनिक थोथी पुरूषी सभ्यता के आकर्षण में फंस कर जीवन में गलत मार्ग को अपनाते है उनका दुखद अंत ही प्रेमचंद ने दिखाया है । या तो उस पात्र से प्रायश्चित कराकर तप, त्याग, दान, सेवा, सादगी, सहानुभूति, विनम्रता आदि विचारों से प्रभावित दिखाकर उसे समतावादि समाज का हिमायती बनाया है । प्रेमचंद नारी को प्रेम की शक्ति का रूप मानते है। इसीलिए प्रेमचंद ने नारी के अंदर सेवा, त्याग, बलिदान, प्रगतिशीलता, कर्तव्य, ज्ञान और पवित्रता आदि उदार भावों को दर्शाया है । स्वतंत्रता पूर्व के समाज में स्त्री हिमायती विचारों अपने साहित्य में चित्रित करने का साहस प्रेमचंद ने दिखाकर नव साहित्य और समाज को उन्नती के पथ पर अग्रसर किया है

संदर्भ

1. सामाजिक परिप्रेक्ष्य –आशुतोष कुमार रॉय हिंदी पटल (दि. 2 अप्रैल 2010)
2. साहित्य का उद्देश्य – प्रेमचंद पृ. 57
3. बहुवचन पत्रिका – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत पृ. 2
4. बहुवचन पत्रिका – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत पृ. 2
5. प्रेमचन्द का नारी विमर्श – विचार एवं व्यवहार – डॉ. रंजना अरगड़े – साहित्यालोचन (15 फरवरी,2011)
6. प्रेमचंद रचनावली भाग – 8 पृ. 448
7. गोदान – प्रेमचंद पृ. 12
8. प्रेमचन्द घर में – शिवरानी देवी पृ. 192
9. कलम का सिपाही – प्रेमचंद पृ. 43–44